श्री सूर्य चालीसा

इन पाठों के बारे में

स्रोत	हर पाठ अपने स्रोत, परम्परा और संस्करण के साथ छपा है। अन्य परम्पराओं और संस्करणों में शब्दों में थोड़ा अन्तर हो सकता है।
लिप्यन्तरण	रोमन पंक्ति देवनागरी से बना IAST लिप्यन्तरण है (ā = दीर्घ आ, ṃ = अनुस्वार, ḥ = विसर्ग, ś/ṣ = श/ष, c = च)। हिन्दी, अवधी और ब्रज पाठों में शब्द के अन्त का मौन 'अ' नहीं लिखा जाता। लिप्यन्तरण में वैदिक स्वर नहीं दिखते।

श्री सूर्य चालीसा

प्रकार	चालीसा
देवता	सूर्य देव
संस्करण	मिलान किया गया पाठ
परम्परा	सौर (सूर्य)
स्रोत	51 चालीसा संग्रह (आरतियों सहित) — रणधीर प्रकाशन, हरिद्वार (2004) — Scan pages 77–80
आभार	पाठ मुद्रित प्रति के स्कैन से लिया गया। सार और अर्थ: उद्योग ज्योतिष सम्पादकीय टीम।
कॉपीराइट	Traditional devotional text in wide circulation. The poet named in the closing verse is a traditional attribution; no mo

कनक बदन कुण्डल मकर, मुक्ता माला अङ्ग ।

kanak badan kuṇḍal makar, muktā mālā aṅga |

पद्मासन स्थित ध्याइये, शंख चक्र के सङ्ग ॥

padmāsan sthit dhyāiye, śaṃkh cakra ke saṅga ||

जय सविता जय जयति दिवाकर ।

jay savitā jay jayati divākar |

सहस्त्रांशु सप्ताश्व तिमिरहर ॥ १ ॥

sahastrāṃśu saptāśva timirahar || 1 ||

भानु पतंग मरीची भास्कर ।

bhānu pataṃg marīcī bhāskar |

सविता हंस सुनूर विभाकर ॥ २ ॥

savitā haṃs sunūr vibhākar || 2 ||

विवस्वान आदित्य विकर्तन ।

vivasvān āditya vikartan |

मार्तण्ड हरिरूप विरोचन ॥ ३ ॥

mārtaṇḍa harirūp virocan || 3 ||

अम्बरमणि खग रवि कहलाते ।

ambaramaṇi khag ravi kahalāte |

वेद हिरण्यगर्भ कह गाते ॥ ४ ॥

ved hiraṇyagarbha kah gāte || 4 ||

सहस्त्रांशुप्रद्योतन कहि कहि ।

sahastrāṃśupradyotan kahi kahi |

मुनिगन होत प्रसन्न मोदलहि ॥ ५ ॥

munigan hot prasanna modalahi || 5 ||

स्रोत-सहित पारम्परिक पाठ। किसी निश्चित परिणाम का दावा नहीं।

अरुण सदृश सारथी मनोहर ।

aruṇ sadṛś sārathī manohar |

हाँकत हय साता चढ़ि रथ पर ॥ ६ ॥

hām□kat hay sātā caṛhi rath par || 6 ||

मंडल की महिमा अति न्यारी ।

maṃḍal kī mahimā ati nyārī |

तेज रूप केरी बलिहारी ॥ ७ ॥

tej rūp kerī balihārī || 7 ||

उच्चैःश्रवा सदृश हय जोते ।

uccaiḥśravā sadṛś hay jote |

देखि पुरंदर लज्जित होते ॥ ८ ॥

dekhi puraṃdar lajjit hote || 8 ||

मित्र मरीचि भानु अरुण भास्कर ।

mitra marīci bhānu aruṇ bhāskar |

सविता सूर्य अर्क खग कलिकर ॥ ९ ॥

savitā sūrya arka khag kalikar || 9 ||

पूषा रवि आदित्य नाम लै ।

pūṣā ravi āditya nām lai |

हिरण्यगर्भाय नमः कहिकै ॥ १० ॥

hiraṇyagarbhāy namaḥ kahikai || 10 ||

द्वादस नाम प्रेम सों गावैं ।

dvādas nām prem soṃ gāvaiṃ |

मस्तक बारह बार नवावैं ॥ ११ ॥

mastak bārah bār navāvaiṃ || 11 ||

चार पदारथ सो जन पावै ।

cār padārath so jan pāvai |

दुःख दारिद्र अघ पुञ्ज नसावै ॥ १२ ॥

duḥkh dāridra agh puñja nasāvai || 12 ||

नमस्कार को चमत्कार यह ।

namaskār ko camatkār yah |

विधि हरिहर कौ कृपासार यह ॥ १३ ॥

vidhi harihar kau kṛpāsār yah || 13 ||

सेवै भानु तुमहिं मन लाई ।

sevai bhānu tumahiṃ man lāī |

अष्टसिद्धि नवनिधि तेहिं पाई ॥ १४ ॥

aṣṭasiddhi navanidhi tehiṃ pāī || 14 ||

बारह नाम उच्चारन करते ।

bārah nām uccāran karate |

सहस जनम के पातक टरते ॥ १५ ॥

sahas janam ke pātak ṭarate || 15 ||

स्रोत-सहित पारम्परिक पाठ। किसी निश्चित परिणाम का दावा नहीं।

उपाख्यान जो करते तवजन ।

upākhyān jo karate tavajan |

रिपु सों जमलहते सोतेहि छन ॥ १६ ॥

ripu soṃ jamalahate sotehi chan || 16 ||

छन सुत जुत परिवार बढ़तु है ।

chan sut jut parivār baṛhatu hai |

प्रबलमोह को फँद कटतु है ॥ १७ ॥

prabalamoh ko pham□d kaṭatu hai || 17 ||

अर्क शीश को रक्षा करते ।

arka śīś ko rakṣā karate |

रवि ललाट पर नित्य बिहरते ॥ १८ ॥

ravi lalāṭ par nitya biharate || 18 ||

सूर्य नेत्र पर नित्य विराजत ।

sūrya netra par nitya virājat |

कर्ण देस पर दिनकर छाजत ॥ १९ ॥

karṇa des par dinakar chājat || 19 ||

भानु नासिका वांस करहु नित ।

bhānu nāsikā vāṃs karahu nit |

भास्कर करत सदा मुख कौ हित ॥ २० ॥

bhāskar karat sadā mukh kau hit || 20 ||

ओंठ रहैं पर्जन्य हमारे ।

oṃṭh rahaiṃ parjanya hamāre |

रसना बीच तीक्ष्ण बस प्यारे ॥ २१ ॥

rasanā bīc tīkṣṇa bas pyāre || 21 ||

कंठ सुवर्ण रेत की शोभा ।

kaṃṭh suvarṇa ret kī śobhā |

तिग्मतेजसः कांधे लोभा ॥ २२ ॥

tigmatejasaḥ kāṃdhe lobhā || 22 ||

पूषां बाहू मित्र पीठहिं पर ।

pūṣāṃ bāhū mitra pīṭhahiṃ par |

त्वष्टा वरुण रहम सुउष्णकर ॥ २३ ॥

tvaṣṭā varuṇ raham suuṣṇakar || 23 ||

युगल हाथ पर रक्षा कारन ।

yugal hāth par rakṣā kāran |

भानुमान उरसर्म सुउदरचन ॥ २४ ॥

bhānumān urasarma suudaracan || 24 ||

बसत नाभि आदित्य मनोहर ।

basat nābhi āditya manohar |

कटि मंह हँस रहत मन मुदभर ॥ २५ ॥

kaṭi maṃh ham□s rahat man mudabhar || 25 ||

स्रोत-सहित पारम्परिक पाठ। किसी निश्चित परिणाम का दावा नहीं।

जंघा गोपति सविता बासा ।

jaṃghā gopati savitā bāsā |

गुप्त दिवाकर करत हुलासा ॥ २६ ॥

gupta divākar karat hulāsā || 26 ||

विवस्वान पद की रखवारी ।

vivasvān pad kī rakhavārī |

बाहर बसते नित तम हारी ॥ २७ ॥

bāhar basate nit tam hārī || 27 ||

सहस्त्रांशु सर्वांग सम्हारै ।

sahastrāṃśu sarvāṃg samhārai |

रक्षा कवच विचित्र विचारे ॥ २८ ॥

rakṣā kavac vicitra vicāre || 28 ||

अस जोजन अपने मन माहीं ।

as jojan apane man māhīṃ |

भय जग बीज करहुँ तेहि नाहीं ॥ २९ ॥

bhay jag bīj karahum tehi nāhīṃ || 29 ||

दरिद्र कुष्ट तेहिं कबहुँ न व्यापै ।

daridra kuṣṭa tehiṃ kabahum na vyāpai |

जोजन याको मनमहं जापै ॥ ३० ॥

jojan yāko manamahaṃ jāpai || 30 ||

अंधकार जग का जो हरता ।

aṃdhakār jag kā jo haratā |

नव प्रकाश से आनन्द भरता ॥ ३१ ॥

nav prakāś se ānanda bharatā || 31 ||

ग्रह गन ग्रसि न मिटावत जाही ।

grah gan grasi na miṭāvat jāhī |

कोटि बार मैं प्रनवौं ताही ॥ ३२ ॥

koṭi bār maiṃ pranavauṃ tāhī || 32 ||

मन्द सदृश सुतजग में जाके ।

manda sadṛś sutajag meṃ jāke |

धर्मराज सम अद्भुत बाँके ॥ ३३ ॥

dharmarāj sam adbhut bāmke || 33 ||

धन्य धन्य तुम दिनमनि देवा ।

dhanya dhanya tum dinamani devā |

किया करत सुरमुनि नर सेवा ॥ ३४ ॥

kiyā karat suramuni nar sevā || 34 ||

भक्ति भावयुत पूर्ण नियमसों ।

bhakti bhāvayut pūrṇa niyamasoṃ |

दूर हटतसो भवके भ्रमसों ॥ ३५ ॥

dūr haṭataso bhavake bhramasoṃ || 35 ||

स्रोत-सहित पारम्परिक पाठ। किसी निश्चित परिणाम का दावा नहीं।

परम धन्य सो नर तनधारी ।

param dhanya so nar tanadhārī |

हैं प्रसन्न जेहि पर तम हारी ॥ ३६ ॥

haiṃ prasanna jehi par tam hārī || 36 ||

अरुण माघ महं सूर्य फाल्गुन ।

aruṇ māgh mahaṃ sūrya phālgun |

मध वेदांगनाम रवि उदयन ॥ ३७ ॥

madh vedāṃganām ravi udayan || 37 ||

भानु उदय वैसाख गिनावै ।

bhānu uday vaisākh ginävai |

ज्येष्ठ इन्द्र आषाढ़ रवि गावै ॥ ३८ ॥

jyeṣṭha indra āṣāṛh ravi gāvai || 38 ||

यम भादों आश्विन हिमरेता ।

yam bhādoṃ āśvin himaretā |

कातिक होत दिवाकर नेता ॥ ३९ ॥

kātik hot divākar netā || 39 ||

अगहन भिन्न विष्णु हैं पूसहिं ।

agahan bhinna viṣṇu haiṃ pūsahiṃ |

पुरुष नाम रवि हैं मलमासहिं ॥ ४० ॥

puruṣ nām ravi haiṃ malamāsahiṃ || 40 ||

भानु चालीसा प्रेम युत, गावहि जे नर नित्य ।

bhānu cālīsā prem yut, gāvahi je nar nitya |

सुख सम्पत्ति लहै विविध, होंहि सदा कृतकृत्य ॥

sukh sampatti lahai vividh, hoṃhi sadā kṛtakṛtya ||

अर्थ

सूर्य की स्तुति सविता, दिवाकर, भानु, भास्कर, विवस्वान, मार्तण्ड आदि नामों से है, जो अरुण सारथी वाले सात घोड़ों के रथ पर चलते हैं। चालीसा सूर्य नमस्कार के बारह नाम और उनका फल बताती है, फिर सिर से पैर तक उनके रूपों को रक्षा-कवच की तरह रखती है और वर्ष के हर मास के सूर्य का नाम बताती है।

स्रोत-सहित पारम्परिक पाठ। किसी निश्चित परिणाम का दावा नहीं।

इस दस्तावेज़ के बारे में

इस दस्तावेज़ के पाठ सार्वजनिक (पब्लिक डोमेन) पारम्परिक भक्ति पाठ हैं या हमारी टीम द्वारा लिखे गए हैं, और अपने दर्ज स्रोत व संस्करण के साथ छपे हैं।

अर्थ हमारे शब्दों में संक्षिप्त व्याख्याएँ हैं, विद्वत्तापूर्ण अनुवाद नहीं। किसी पाठ के अपने श्लोकों में बताए लाभ पाठ का अंश हैं, गारण्टी नहीं।

कुछ साधनाएँ परम्परा से गुरु-मार्गदर्शन में की जाती हैं। अपनी परम्परा के मार्गदर्शन का पालन करें।